आलोचक

विजयदेव नारायण साही

प्रश्नपत्र - हिंदी आलोचना

कोड - HIND 3012

सेमेस्टर - VI

पाठ्यक्रम - स्नातक (प्रतिष्ठा) हिंदी

प्रो. प्रमोद मीणा,

हिंदी विभाग

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी - 845401

आलोचक विजयदेव नारायण साही
(7 अक्टूबर, 1924 - 5 नवम्बर, 1982

प्रमुख आलोचनात्मक कृतियां :

- छठवां दशक
- जायसी
- साहित्य और साहित्यकार का दायित्व
- साहित्य क्यों

महत्वपूर्ण आलोचनात्मक लेख

- लघु मानव के बहाने हिंदी कविता पर एक बहस
- शमशेर की काव्यानुभूति की बनावट
- धर्मनिरपेक्षता की खोज में हिंदी साहित्य
- उसके पड़ोस पर एक दृष्टि
- साहित्य क्यों
- पुनर्मूल्यांकन किस आधर पर

साही जी को अपने सफल आलोचक होने पर संदेह था

साही जी की आलोचना का सशक्त पहलू

भाव ग्राहिण शक्ति, जीवन के अनुभव क्षेत्रों में सिद्धांतों को लागू करने की क्षमता, निष्पक्षता

साही जी की आलोचना का कमजोर पहलू

तर्क-वितर्क के साथ शास्त्रीय गद्य न लिख पाना

भावुक स्थलों पर लेखनी में शक्ति किंतु तार्किक स्थलों पर लड़खड़ाहट

अविराम बौद्धिक जिज्ञासा से संचालित

एक प्रश्न का एक उत्तर मानकर संतुष्ट नहीं होते, कई उत्तरों के लिए स्पेस बनाते चलना

समग्रतावादी सतुंलनवादी आचार्य नहीं

बहस के क्रम में इनके विचारसूत्रों में सम्यक तारतम्य नहीं होता

मार्क्सवाद पर मुक्तिबोध अडिग किंतु साही 1953 में ही ‘मार्क्सवादी समीक्षा और उसकी कम्यूनिस्ट परिणति’ लिख चुके थे

किंतु यहाँ उनके निष्कर्ष पूर्वाग्रह युक्त और सरलीकृत

लघु मानव के बहाने हिंदी कविता पर एक बहस में आलोचक की भूमिका स्पष्ट कर देना :

- आलोचक का काम साहित्यिक कृति की संवेदना को जबर्दस्ती खींचकर पाठक तक पहुँचाना नहीं
- काव्य के प्रवाह तक पाठक को जाने से रोकने वाले वैचारिक और धारणात्मक पूर्वाग्रहों को दूर करना ही आलोचक का काम
- आलोचना को साहित्य का दर्शनशास्त्र बताना
- और इस दर्शनशास्त्र का एक काम संश्लिष्ट उत्तर की सीमा रेखाएँ स्पष्ट कर देना ताकि साहित्य गूंगे का गुड़ बनकर न रह जाएँ
- रेडियो की सुई को लहरमान पर लगा भर देना आलोचक का काम

शमशेर की दुरूह कविताओं की व्याख्या करते हुए उन पर सार्थक टिप्पणियाँ करना

- शमशेर के प्रसंग में काव्यानुभूति की मालार्मीय विडम्बना का जिक्र : भौतिक जीवन की सत्यता के प्रति बढ़ती जकड़न के साथ काव्यानुभूति के लिए अपेक्षित अतिक्रमण पीछे छूटता जाना - लिखना कम होता जाना

- किंतु ऐसा नहीं है कि शमशेर ने कम लिखा हो और लिखे को प्रकाशित न कराया हो

- शमशेर ने निजी जीवन प्रसंगों पर लिखा है - आंदोलन आदि पर लिखा है

शमशेर को क्षणिक भर के सौंदर्य का कवि ये मानते हैं किंतु उससे सहमत नहीं हुआ जा सकता

बीहड़ और कड़ियल अनुभव भी शमशेर के यहाँ हैं

सघन मांसल सौंदर्य की कविताएँ भी उन्होंने लिखी हैं, राजनीतिक कविताएँ भी शमशेर की कलम से निकली हैं

शमशेर को लेकर आज साही से असहमतियाँ हो सकती हैं किंतु शमशेर की कविता के प्रति पहली बार गंभीरता के साथ उन्होंने ही बात की थी

‘पुनर्मूल्यांकन किस आधार पर’ में श्रेष्ट आलोचना पर प्रकाश डालना

- श्रेष्ठ आलोचना एक साथ बहुत से पहलुओं को उजागर करती चलती है
- और वह पाठक को एक उन्मुख अवस्था में ले जाकर छोड़ देती है

किंतु प्रगतिवाद से उनकी शिकायत :

अतीत से अपने संबंध नये करने की जगह वह वैधता के लिए अतीत की ओर दौड़ता है

धर्मनिरपेक्षता की खोज में हिंदी साहित्य' और 'उसके पड़ोस पर एक दृष्टि' - इनमें चलाई गई लंबी बहस आज और भी प्रासंगिक

'

समान दूरी वाली धर्मनिरपेक्षता और समान निरर्थकता वाली धर्म निरपेक्षता - दोनों को साही द्वारा समान महत्व दिया जाना

- साही फिरदौसी और कालिदास, दोनों को समान रूप से याद करते हैं
- वे लोकभाषा में हिंदू और मुसलमान, दोनों को मिलते पाते हैं

हिंदी साहित्य में वे हिंदू और मुसलमान से परे भी कुछ चीजें देख पाते हैं

भक्ति काल का पूरा माहौल बहुधर्मी बताना - सूर, तुलसी और जायसी के साथ कबीर भी है भक्तिकाल में और उनके पूर्वज भी हैं पृष्ठभूमि में

ब्रजभाषा को वे हिंदी की तुलना में अधिक प्रभुत्व सम्पन्न बताना जिसने फारसी और संस्कृत, दोनों को तोड़कर अपनी लय में घुला लिया

पद्मावत का कथा रूपक जायसी के लिए एक बड़ी चुनौती होना

अलाउद्दीन और चित्तौड़ की टक्कर को वे बिना किसी लाग-लपेट के शुद्ध हिंदू-मुसलिम संघर्ष के रूप में लेते हैं और पूरी कथा में अलाउद्दीन की जीत अवश्यंभावी नियति के रूप में मंडराती पाते हैं

किंतु साथ ही साही की मान्यता है कि अलौकिक प्रेम रसायन को संग्राम की आंच पर परखते हैं जायसी

पद्मावत के अंत को यूरोपीय अर्थ में ट्रैजेडी न बताना किंतु उसे कई स्तरों पर एक साथ विवेक दृष्टि का उदय बताना किंतु अन्यत्र इसे एशिया की धरती पर लिखी यूनानी ढंग की एकमात्र ट्रेजडी के रूप में देखना

इतिहास लोक (बाहरी सतर पर) और सिंहलोक (आंतरिक सतह पर) अपने आप में पूर्ण किंतु एक दूसरे से जुदा-जुदा नहीं अपितु एक-दूसरे को बेधते रहते हैं - गहरी ट्रेजडी को जन्म देना

लघु मानव के बहाने नई कविता पर एक बहस (छायावाद से अज्ञेय तक)

प्रस्तुत लेख में छायावाद और उत्तर छायावाद को आधार-अधिरचना के रूप में देखना

मनुष्य की पूर्णता सिर्फ एक संभावना है और संभावना यथार्थ नहीं होती, यथार्थ होता है सहज मनुष्य

उत्तरदायावादी कविता ने छायावाद की मेटाफिजिकल दार्शनिक मुद्रा और तज्जनित गंभीरता को नमस्ते कह दिया

साही जी इसे महामानव का लघु या सहज मानव के रूप में विकास बताते हैं

नई कविता को छायावाद की विकसित परंपरा में दिखाना, न कि दोनों के बीच दुर्लंघ्य खाई दिखाना

- छायावाद का महामानव - छायावाद के दूसरे चरण का साधारण आदमी - नई कविता का लघु मानव
- बड़े परिवेश में बड़ा आदमी, साधारण परिवेश में साधारण आदमी और लघु परिवेश में लघु आदमी
- बच्चन का पीने वाला आदमी सहज इसलिए है क्योंकि जिन बातों पर उसका अधिकार नहीं, उन्हें लेकर वह लंबे-चौड़े दावे नहीं करता
- भगवती चरण वर्मा का बीज गुप्त आडम्बरहीन, ईमानदार और निश्छल

प्रसाद और अज्ञेय की काव्यानुभूति की बुनावट में आंतरिक एकसूत्रता देखना

प्रसाद अनुभूति को दर्शन में पर्यवसित करने वाले जबकि अज्ञेय दर्शन को अनुभूति में

धर्म के साथ राजनीति के वर्चस्व से भी साही को एतराज

उन्हें समस्या मार्क्स से नहीं मार्क्सवादियों से जो साहित्य और कला को वर्ग संघर्ष प्रचार का अस्त्र मानते थे

साही ने आलोचना की संस्कृति का निर्माण किया

चाहे उनकी आलोचना आधी-अधूरी किंतु फिर भी कई स्वनामधन्य आलोचकों से ज्यादा पूर्ण आलोचक

- विश्वनाथ त्रिपाठी

धन्यवाद

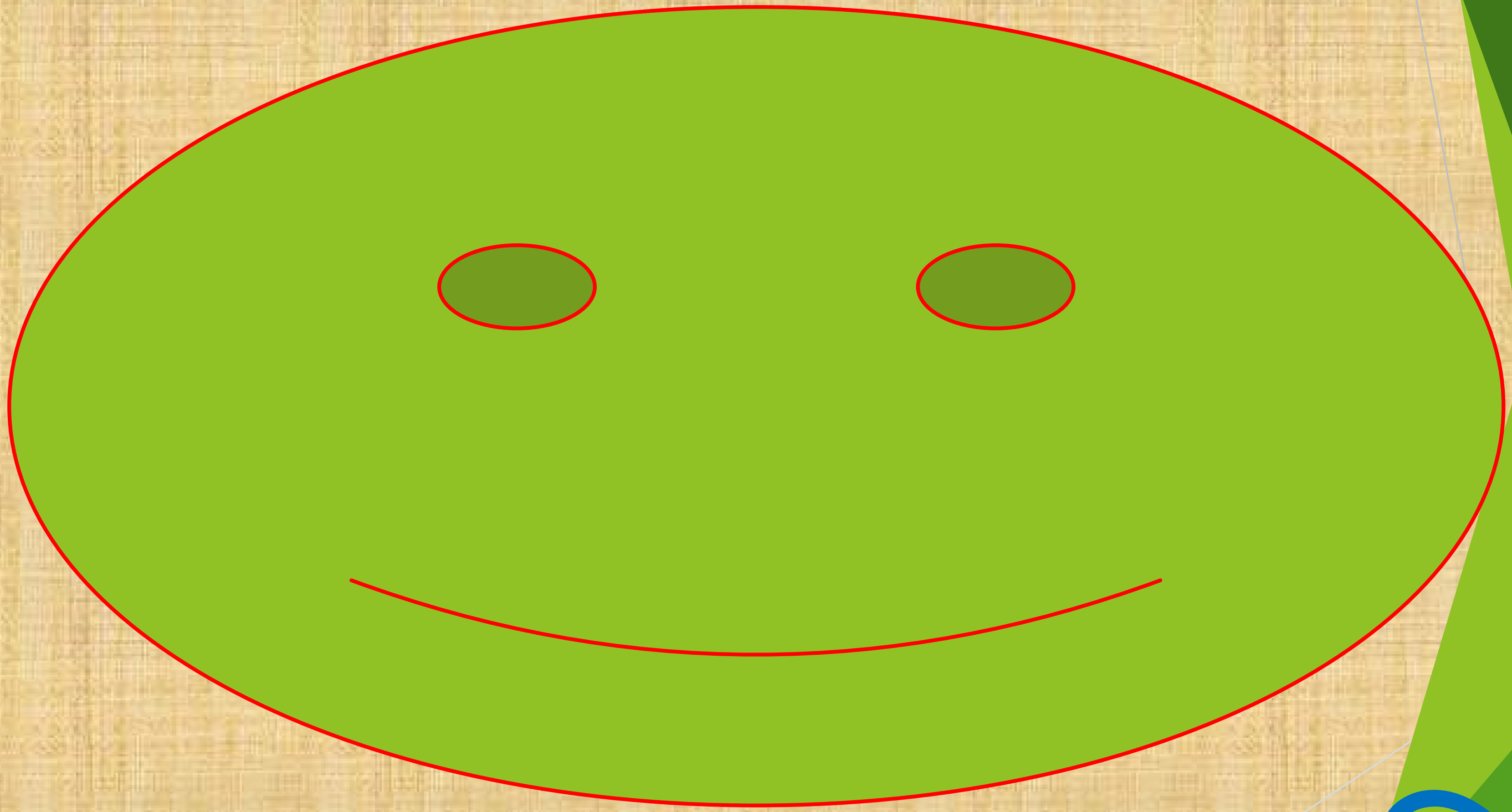

शुक्रिया